Madhya Bharti
Humanities and Social Sciences

मध्य भारती
मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN: 0974-0066

"मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

शहरोज़ आलम
शोधार्थी

डॉ० भूपेन्द्र कौर
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश

शिक्षा बालक की सर्वांगीण उन्नति का अतिउत्तम साधन है। उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का सोपान है। शिक्षा बालक में अन्तर्निहित शक्तियों को उभारकर उन्हें पूर्ण विकसित करती है। यह वह ज्ञान है जो बालक रूपी हीरे की क्रश्मल रूपी बुराईयों को दूर कर उसके आन्तरिक गुणों को जगमगा देती है, जिसके प्रकाश में बालक स्वयं अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है और समाज को भी लाभ पहुँचाता है। शिक्षा बालक के व्यवहार का परिष्कार करती है। यह परिष्कार बालक और समाज दोनों के लिए उपयोगी होती है। प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना था। किसी भी लोकतंत्रीय राष्ट्र की प्रगति के लियें वहाँ की प्रजा के लिए विशेष प्रबन्ध किये जाने चाहिए जो सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। लोकतांत्रिक समता का सिद्धान्त तभी काम कर सकता है जब पूरा राष्ट्र यथासम्भव एक ही स्तर पर आ जाये लेकिन भारत वर्ष में आज भी पूरा समाज कई वर्गों तथा समुदायों में विभाजित है। जिससे एक मुस्लिम समाज दूसरा गैर मुस्लिम समाज है। आंकड़ों के संकलन करने के उपरान्त प्रस्तुत लघु शोध के निम्न निष्कर्ष पाये गये - मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया, मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य शब्द - मुस्लिम बालिकाएं, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता और संस्कृति कों उन्नतशील बनायें रखने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, प्रत्येक राष्ट्र अपनी संस्कृति, विचारधारा और परम्परा को शिक्षा के माध्यम से सतत् प्रभावित रखता है, अर्थात् शिक्षा के द्वारा ही आचार, विचार, मान्यतायें, प्रथायें, अधिकारों व कर्तव्यों का ज्ञान बालक प्राप्त करता है, जो विद्यालय के सुन्दर वातावरण में ही प्राप्त किये जा सकते हैं। परिवार को एक बालक की प्रथम पाठशाला माना जाता है एवं विद्यालय जाने से पूर्व बालक की पाठशाला उसका घर ही होता है और उसकी पहली अध्यापिका उसकी माता होती है। इस विद्यालय रूपी परिवार में बालक का विकास तब प्रारम्भ हो जाता है जब बालक,

ISSN: 0974-0066

विद्यालयी वातावरण में प्रवेश करता है यह विकास अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि बालक के विकास में पारिवारिक वातावरण की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा में पारिवारिक वातावरण के महत्व को स्वीकार करते हुये प्रख्यात् मनोवैज्ञानिक **जॉन लॉक** ने कहा है जब कोई बालक पैदा होता है तो उसका मस्तिष्क कोरी पटिया के समान होता है। जैसे-जैसे वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ता है उसकी मस्तिष्क रूपी पटिया ज्ञान से अंकित होती जाती है और उसके ऊपर उसके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव दिखाई देने लगता है। अगर हम परिवार की व्याख्या करें तो परिवार मानवीय समाज की एक सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। परिवार व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित है क्योंकि एक व्यक्ति का पूरा जीवन सम्भवतः परिवार में ही व्यतीत होता है। परिवार वह प्रारम्भिक अवस्था है, जो बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। परिवार स्नेह, अनुशासन इत्यादि के माध्यम से अपने परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार को भी नियन्त्रित करता है तथा उसका सर्वांगीण विकास करता है। अगर पारिवारिक वातावरण स्वच्छ होगा तो बालक का विकास भी उचित दिशा में होगा। अगर पारिवारिक वातावरण स्वच्छ नहीं है तो बालक के उचित विकास की बात करना बेमानी है, सामान्यतः देखा जा सकता है कि स्वच्छ वातावरण में पले बढ़े बालक ऊँचे पदों पर पहुँचते हैं और गन्दे पारिवारिक वातावरण के बालक अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं। जिस प्रकार का परिवार का वातावरण होता है उसी प्रकार का विकास बालक का होता है। मुस्लिम वातावरण में पलने वाला बालक मुस्लिम संस्कृति और धार्मिक क्रियाकलापों को अपनाता है जबकि गैर मुस्लिम परिवार का बालक जिस प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में रहता है उसी प्रकार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों को अपनाता है उसी प्रकार उसका विकास भी होता है। पारिवारिक वातावरण का एक मुस्लिम छात्राओं के जीवन में अत्यन्त महत्व होता है। एक व्यावसायिक पारिवारिक वातावरण का बालक व्यवसाय में रूचि रखता है जबकि एक नौकरशाह परिवार के वातावरण में पलने वाला बालक नौकरशाही को अपनाता है। इससे सिद्ध होता है कि जिस प्रकार का परिवार का वातावरण होगा उसी प्रकार का बालक का विकास होगा है। यह परिवार का वातावरण ही छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करता है।

आवश्यकता एवं महत्व

मुस्लिम समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने अनेक संवैधानिक अधिकार प्रदान किये हैं तथा धारा १५, १७, २५ व ३० तथा नीति निर्देशक सिद्धान्त ३३०, ३३९ व ३८० तथा १। के अनुसार उनके हितों की रक्षा की गई है। इन धाराओं व नीति निर्देशक तत्वों के क्रम में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा संस्थानों की स्थापना की गई, जिसके तहत सन् १९७८ ई० में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की गई, जिसे १९९३ ई० में संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। मौलाना आज़ाद एज्यूकेशन फाउन्डेशन की स्थापना अल्पसंख्यक वर्ग के शैक्षिक व सामाजिक उत्थान के सरोकार के लिए की गई, जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह छात्राओं की शिक्षा में योगदान हेतु आवासीय विद्यालयों की स्थापना में सहयोग प्रदान कर रचनात्मक कार्य कर रहा है। यह गैर सरकारी संगठनों को भी आर्थिक सहयोग संस्थान एम०ए०ई०एफ०

ISSN: 0974-0066

की स्थापना की गई। भारत का संविधान केवल नियमों व कानूनो का ही संकलन मात्र नहीं है, अपितु इसमें राष्ट्र की आत्मा के भी दर्शन होते है। किसी भी लोकतंत्रीय राष्ट्र की प्रगति के लियें वहाँ की प्रजा के लिए विशेष प्रबन्ध किये जाने चाहिए जो सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। लोकतांत्रिक समता का सिद्धान्त तभी काम कर सकता है जब पूरा राष्ट्र यथासम्भव एक ही स्तर पर आ जाये। लेकिन भारत वर्ष में आज भी पूरा समाज कई वर्गों तथा समुदायों में विभाजित है। जिससे एक मुस्लिम भी समाज है। मुस्लिम समाज से आशय इस्लाम धर्म को मानने वाले व्यक्तियों से है। वर्तमान समय में न केवल ग्रामीण परिवेश व अशिक्षा उनकी उन्नित में अनेक रूप से बाधा उत्पन्न करती हैं एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर भी प्रभाव डालते हैं। प्रायः विद्यालयों में सभी धर्मों के बालक अध्ययन करते हैं। कुछ मुस्लिम परिवार का पारिवारिक वातावरण धार्मिक कट्टरता एवं अशिक्षा के कारण बहुत अच्छा नहीं माना जाता है। जिस कारण उनका स्तर गैर मुस्लिम समुदाय के बालकों से भिन्न रहता है। कुछ मुस्लिम परिवारों का पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं माना जाता है जिस कारण परिवार में अध्ययनशील छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर भी प्रभावित होता है। मुस्लिम छात्राओं की अच्छी बुद्धि लब्धि होने के बाबजूद कभी-कभी मुस्लिम छात्राऐं शैक्षिक पिछड़ेपन के शिकार हो जाती हैं। इसका मुख्य कारण मुस्लिम छात्राओं को पारिवारिक वातावरण, जो मुस्लिम छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करता है। कभी-कभी विद्यालय का स्वच्छ वातावरण मुस्लिम छात्राओं पर अपना सकारात्मक प्रभाव नहीं छोड़ पाता है, क्योंकि मुस्लिम छात्राओं के परिवार का वातावरण उनके विकास में बाधा पहुँचाता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

शिक्षा में निम्नलिखित शोद्यार्थियों ने अपने अध्ययन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला जिसमें शंकर (१९९५), कंशल (१९९८), क्राइन (१९९९),चक्रवर्ती एस० (२२०३), गोपाल (२००९) एवं संह, एम. पी. (२००२), कुमार, एम. (२००८), हंसराज एवं दिव्य, शिखा (२०११), खातून मुबीना सैयदा (२०१४), नेहा दूबे (२०१९) आदि प्रमुख हैं।

समस्या कथन

''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन''

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

मुस्लिम बालिकाएं :- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् मुस्लिम बालिकाओं से तात्पर्य उन बालिकाओं से है जो मुस्लिम समाज की कक्षा ११ से कक्षा १२ में अध्ययनरत् है। मुस्लिम बालिकाओं से तात्पर्य इस्लाम धर्म को मानने वाले छात्राओं से है। भारत की जनसंख्या २००१ के अनुसार मुस्लिम जनसंख्या १३.८ करोड़ है। जो भारत की जनसंख्या का १३.४ प्रतिशत है। ७.१३ करोड़ पुरूष और ६.६८ करोड़ के लगभग महिलाएँ है और लिंग अनुपात ९३६ का है। २००१ के आँकड़ों के अनुसार सात साल और उससे ऊपर के लिए साक्षरता दर

ISSN: 0974-0066

६४.८ प्रतिशत है। मुस्लिम साक्षरता दर (५१.६ प्रतिशत) राष्ट्रीय ससाक्षरता दर से कम है। भारत की ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता दर ५६.७ प्रतिशत है और शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर ७०.१ प्रतिशत है। सात साल आसैर इससे ऊपर के पुरूष-महिलाा मुस्लिम जनससुख्या में ४०.६ प्रतिशत निरक्षर है। यह दर ग्रामीण इलाकों में ४७.३ प्रतिशत है, तथा शहरी क्षेत्रों में २६.६ प्रतिशत है।

पारिवारिक वातावरण :- पारिवारिक वातावरण का अर्थ बालक के उस वातावरण से है जो उसे परिवार से मिलता है। अगर परिवार की बात करें तो "घर या परिवार मानवीय समाज की एक सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है"। घर या परिवार व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास गृहवातावरण के अन्तर्गत ही होता है। गृहवातावरण एक बालक तथा उसके व्यवहार को प्रारम्भ से ही नियंत्रित करने, स्नेह व अनुषासन प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाता है ।

शैक्षिक निष्पत्ति :- शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य है, विद्यालय में अध्यापित विषयों में सन्तोषजनक ज्ञान प्राप्त करना। किसी विद्यार्थी के विद्यालयी विषयों मे प्राप्त ज्ञान का पता एक लिखित प्रमाण पत्र के रूप में प्राप्त होता है जो विद्यार्थी विषयक कार्य के बारे में सूचित करता है। यह प्राप्त ज्ञान एवं विकसित कौशल दैनिक, मासिक, एवं वार्षिक परीक्षाओं में प्राप्त अंकों से ज्ञात होता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थी किस विशिष्ट विषय अथवा विशिष्ट पाठ्यक्रम का अध्ययन किस प्रकार करे ताकि वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

१. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

२. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

१. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

२. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुस्लिम बालिकाओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

ISSN: 0974-0066

१०० मुस्लिम बालिकाओं का चयन करके उनको माध्यम में बांटा गया है।

उपकरण

पारिवारिक वातावरण – डॉ० हरप्रीत भाटिया एवं डॉ० एन० के० चड्डा

शैक्षिक निष्पत्ति – स्वनिर्मित

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – १

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह-सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र॰स॰	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
१.	हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाएं	५०	.०ण्०४२	ऋणात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या –

तालिका संख्या १ में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दशार्या गया है जिसमें हिन्दी माध्यम की मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान -०.०४२ प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान ऋणात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है।

तालिका संख्या – २

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक रुचि के मध्य सह-सम्बन्ध की स्थिति एवं प्रभाव

क्र॰स॰	समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता
१.	अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाएं	५०	०ण्०७७	धनात्मक सहसम्बन्ध

व्याख्या –

तालिका संख्या २ में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दशार्या गया है जिसमें अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम लड़कियों का दोनो चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान ०.०७७ प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है।

निष्कर्ष

1. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

ISSN: 0974-0066

2. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम की मुस्लिम बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गुप्ता एस० पी० और अलका (२००८). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

लाल, रमन बिहारी (२००४). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. मेरठ : रस्तौगी पब्लिकेशन।

पाठक, पी० डी० (२००६-०७). भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

पाण्डेय रामशकल (२००६-०७). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

पाण्डेय, के० पी०, (२००३). शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, मेरठ : अमित प्रकाशन।

सिहँ, अरूण क ुमार (२००६). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

तरूण हरिवंश (२०००). भारतीय शिक्षा तथा विश्व की शिक्षा प्रणालियाँ. नई दिल्ली।

ढौंढ़ियाल, एस० एन० एवं पाठक, ए० वी०(२००३). शैक्षिक अन ुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

गैरिट, हैनरी ई० एवं बुडवर्थ आर० (२००७). शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के सांख्यिकीय प्रयोग, लुधियाना : कल्याणी पब्लिशर्स पेज - २४७.